सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या–cm-494
14/10/2017

# शिक्षा के क्षेत्र में पटना विश्वविद्यालय की बहुत बड़ी भूमिका :– मुख्यमंत्री

पटना, 14 अक्टूबर 2017 :– मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने पटना विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुये कहा कि आज हम सबके लिए बहुत ही गौरव का दिन है। पटना विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह का आयोजन हुआ है और हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने समय दिया और आज वे कार्यक्रम में उपस्थित हुए। मैं सबसे पहले उनका स्वागत करता हूँ। पटना विश्वविद्यालय से जुड़ी अपनी पुरानी यादों को साझा करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा ये जो लॉन है, उसकी याद ताजा हो गई। उन्होंने कहा कि मैं 1966 में मैट्रिक पास करने के बाद साइंस कॉलेज में ही प्री–साइंस की पढ़ाई करने आया था और इस कॉलेज के बारे में तो आमलोगों के बीच में यही चर्चा होती थी कि साइंस कॉलेज एशिया का सबसे बड़ा कॉलेज है और उस समय जो भी मैट्रिक पास करता था उसका और उसके माता–पिता, उनके परिजन की यही आकांक्षा होती थी कि अगर उसने साइंस से पास किया है तो उनका नामांकन साइंस कॉलेज में हो जाए, और अगर उसने आर्ट्स से पढ़ा है तो पटना कॉलेज में उसका एडमिशन हो जाए। उस समय सब लोगों का यही एसपिरेशन होता था, हम सब लोगों का भी एसपिरेशन था कि पटना विश्वविद्यालय के साइंस कॉलेज में पढ़ाई कर लें। मेरा नामांकन जब साइंस कॉलेज में हुआ, तब काफी प्रसन्नता हुई। यहीं प्री–साइंस की पढ़ाई हमने पूरी की। इसके ठीक बगल में, सटा हुआ है बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, उसमें फिर नामांकन हुआ, वहीं हम इंजीनियरिंग की पढ़ाई किए। साइंस कॉलेज के प्रति मेरे मन में ऐसा आकर्षण था कि जब मेरा इंजीनियरिंग कॉलेज में नामांकन होना था, उस समय मैं साइंस कॉलेज में बी0एस0सी0 पार्ट–वन में एडमिशन लिए हुआ था। सात दिन तक यहां बी0एस0सी0 पार्ट–वन में छात्र रहा। इसके बाद मेरा वहां एडमिशन हो गया था। इच्छा ही नहीं होती थी कि यहां से हम वहां जाएं लेकिन अंततोगत्वा वहीं नामांकन हुआ था तो वहां जाना पड़ा, वहीं से ग्रेजुएशन किया। उन्होंने कहा कि मेरी इच्छा इंजीनियरिंग कॉलेज में जाने की नहीं थी लेकिन मैंने पिता जी की इच्छा के चलते इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। उस समय पटना यूनिवर्सिटी की कितनी सोहरत थी, कितना नाम था। यह देश का सातवां पुराना विश्वविद्यालय है। जब बंगाल से बिहार अलग हुआ और बिहार–उड़ीसा एक प्रांत बना तथा पटना उसकी राजधानी बनी, उसी समय यह मांग उठने लगी थी कि पटना में विश्वविद्यालय बने। उसके बाद पटना विश्वविद्यालय 1917 में बना। यह 1917 का साल तो अद्भूत रहा। 1917 में पटना विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। साथ ही, इसी वर्ष बापू बिहार आए और चंपारण सत्याग्रह हुआ। यह हम सब लोगों के लिए गौरव की बात है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह हमलोगों के लिए खुशी की बात है कि पहली बार पटना विश्वविद्यालय के किसी कार्यक्रम में देश के प्रधानमंत्री आए हैं। पता चला कि यहां एक बार नेहरु जी को यहां आना था लेकिन वे नहीं आ सके थे। एक बार आए भी तो दरभंगा हाउस में गए थे। उस समय पटना विश्वविद्यालय का कार्यक्रम नहीं था। आज पटना विश्वविद्यालय

के कार्यक्रम में हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी का आना हम सबलोगों के लिए प्रसन्नता का विषय है।यहां आने के लिए प्रधानमंत्री जी ने पहले ही समय दे दिया था,इसी वर्ष जनवरी में जब वे प्रकाश पर्व के अवसर पर आने वाले थे। लेकिन प्रकाशपर्व का अपना महत्व था 350वां प्रकाश पर्व गुरु गोविंद सिंह जी महाराज का जन्मोत्सव प्रकाश पर्व के रुप में मनाया गया था। उसको देखते हुए तो ये हुआ कि पटना विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में अलग से प्रधानमंत्री आएंगे। जब शताब्दी वर्ष की शुरुआत हुई थी उसी समय कार्यक्रम आयोजित करने का विचार पटना विश्वविद्यालय का था। और एक तरह से सैद्धांतिक रुप से आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने पिछले वर्ष सहमति दे दी थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की बहुत बड़ी भूमिका है, यहीं से लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने पढ़ाई की, दिनकर जी भी यहीं से पढ़े। इस विश्वविद्यालय के पढ़े हुए दो–दो छात्र भारत के चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बने, अटॉर्नी जनरल बने, मंत्रीगण तो केंद्र में बहुत बने। अगर अधिकारियों की सूची देखी जाय तो आजाद भारत की सूची में आई0ए0एस0, आई0पी0एस0 और आई0एफ0एस0 की बड़ी संख्या पटना विश्वविद्यालय के छात्रों की रहती थी। उन्होंने कहा कि जब हमलोग पढ़ते थे, उस समय तो 22–23 लोगों का यू0पी0एस0सी0 की परीक्षा में सफलता प्राप्त करना साधारण बात थी। उन्होंने कहा कि इसका पूरा संबंध मेरिट से रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा की आदरणीय प्रधानमंत्री जी के आगमन से लोगों के मन में आकांक्षा जगी है। हर बिहारवासी के मन में आकांक्षा है, जिनका भी पटना विश्वविद्यालय से सरोकार है, वो आप की तरफ आशाभरी निगाहों से देख रहे हैं। जब हमलोग संसद में थे तो न जाने कितनी बार मांग किया था कि पटना विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाया जाए। उन्होंने कहा कि आप देख सकते हैं लोगों के उत्साह को। 1917 में पटना विश्वविद्यालय का जो गठन हुआ, संयोगवश बापू का चंपारण सत्याग्रह भी उसी वर्ष शुरु हुआ। चंपारण सत्याग्रह का शताब्दी वर्ष समारोह चल रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री से आग्रह किया कि थोड़ी कृपा करिए और पटना विश्वविद्यालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान कर दीजिए। मैं समझता हूं कि आज नहीं अगले सौ वर्ष तक भी पटना विश्वविद्यालय का या बिहार का एक भी व्यक्ति आपको इसके लिए नहीं भूलेगा। पटना विश्वविद्यालय जब बना था तो इंडियन लेजिस्लेटिव कौंसिल में ही बिल आया था और वहीं से पारित हुआ था। यानि केंद्र से ही पारित हुआ था। आज वही कौंसिल संसद कहलाता है।लेकिन उस समय अंग्रेजों के जमाने में जो लेजिस्लेटिव कौंसिल थी उसी में एक्ट बना और पटना विश्वविद्यालय का गठन हुआ। डॉ0 तेज बहादुर सप्रू, पंडित मदन मोहन मालवीय, जिन्ना साहब, मौलाना मजहरुल हक साहब, सब लोगों ने सहयोग किया था और पटना विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

मुख्यमंत्री ने शिक्षा की गुणवत्ता की बात पर बल देते हुए कहा कि जब समाज शिक्षित नहीं होगा, तो हम सही मायने में विकसित नहीं हो सकते। उन्होंने कहा कि बापू जब चंपारण आए तो न सिर्फ नीलहों के अत्याचार के खिलाफ लोगों को जगाया बल्कि लोगों के मन से डर भी निकाल दिया। उन पर हो रहे अत्याचार से संबंधित कानून बदले गए, समाधान हुआ और चंपारण एग्रेरियन लॉ बना। बापू पूरे चंपारण में घूमते रहे और लोगों को इस बात के लिए तैयार करते रहे कि स्वच्छता पर ध्यान दो। आपका तो बहुत बड़ा कार्यक्रम है स्वच्छता। आपने स्वच्छता को इतनी अहमियत दी है कि आपने उसका नाम स्वच्छाग्रह किया है। हम सब इसके लिए आपका अभिनंदन करते हैं। बापू ने चंपारण से स्वच्छता की बात की, शिक्षा की बात की। चंपारण में एक भी स्कूल नहीं था, शिक्षा के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए बापू ने छह स्कूलों की स्थापना की और इसके साथ–साथ स्वास्थ्य के प्रति भी जागृति लायी। सिर्फ किसान आंदोलन नहीं बल्कि इसके साथ–साथ बापू ने छुआछूत और जाति–पाति

के खिलाफ जबरदस्त संदेश दिया। अपने काम के बदौलत पटना विश्वविद्यालय अपने मेरिट पर ऑक्सफोर्ड ऑफ द ईस्ट कहलाता था। आज कम से कम आपकी मदद से फिर ऊँचाई पर चढ़ जाए और केंद्रीय विश्वविद्यालय का रुतबा इसको मिल जाए तो बहुत बड़ी बात होगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार ज्ञान की भूमि है, भगवान बुद्ध को ज्ञान यहीं प्राप्त हुआ, भगवान महावीर का जन्म यहीं, ज्ञान की प्राप्ति यहीं, निर्वाण यहीं हुआ। चाणक्य ने अर्थशास्त्र की रचना यहीं की, आर्यभट्ट ने दुनिया को शून्य प्रदान किया, वो यही धरती है।

इस मौके पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पटना विश्वविद्यालय में मेरा कार्यक्रम मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि पटना विश्वविद्यालय में प्रधानमंत्री के तौर पर पहली बार आने का सौभाग्य मिला। देश को इस मुकाम पर पहुंचाने में पटना विश्वविद्यालय का बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि बिहार के पास सरस्वती की कृपा है। सरस्वती के साथ लक्ष्मी के लिए केन्द्र मदद करेगा। 75वीं स्वतंत्रता दिवस पर बिहार भी गौरवशाली होगा। उन्होंने कहा कि देश के विकास में बिहार का अहम योगदान रहा है। बिहार पुरानी ज्ञान गंगा की धारा और विरासत रहा है। नालंदा और विक्रमशिला को कौन भूल सकता है। उन्होंने कहा कि देश के विकास में पटना विश्वविद्यालय का योगदान अहम है। अगर पीढ़ियों के बारे में सोचते हैं तो मनुष्य को बोइए। उन्होंने कहा कि 2022 तक बिहार को समृद्ध बनाना है।

समारोह को उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी एवं पटना विश्वविद्यालय के कुलपति श्री रास बिहारी सिंह ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर राज्यपाल सह पटना विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सत्य पाल मलिक, केंद्रीय मंत्री श्री रामविलास पासवान, केंद्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद, केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उपेंद्र कुशवाहा, केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे, शिक्षा मंत्री श्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा, राज्य सरकार के कई मंत्रीगण, सांसदगण, बिहार विधानसभा के और बिहार विधान परिषद के सदस्यगण, पटना विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारीगण, छात्र–छात्राएं एवं पूर्ववर्ती छात्रगण उपस्थित थे।

******